जय जय शिव शम्भो

शब्द-रचना व संगीत-रचना : गुरुमाई चिद्विलासानन्द

जय जय शिव शम्भो। जय जय शिव शम्भो।
महादेव शम्भो। महादेव शम्भो॥

मंगलमय भगवान शिव की,
कल्याणकारी भगवान शम्भु की बारम्बार जय हो!
महादेव की, उन भगवान शम्भु की जय हो जो सर्वसुखों के स्रोत हैं!

चित्र में हराभरा रुद्राक्ष का पेड़ दर्शाया गया है जो भगवान शिव का पवित्र स्वरूप है।
इस नामसंकीर्तन की सम्पूर्ण रिकॉर्डिंग सिद्धयोग बुकस्टोर पर उपलब्ध है।

परिचय : कुन्ती फ़ॅन्हुल

एक सिद्धयोग संगीतज्ञ की अपनी भूमिका निभाते समय जब भी मैं हारमोनियम पर 'जय जय शिव शम्भो' की धुन बजाती हूँ, तब मैं विशुद्ध आनन्द की व भगवान की अनन्त प्रकृति के प्रति सम्मान की अनुभूति करती हूँ। जब यह नामसंकीर्तन आरम्भ होता है तो मुझे ऐसा महसूस होता है मानो हारमोनियम के परदों पर चलती मेरी उँगलियों पर भगवान स्वयं नृत्य कर रहे हों और शीघ्र ही मैं यह भूल जाती हूँ कि मैं बजा रही हूँ। यह अनुभूति इतनी आनन्दमय हो जाती है कि मुझे बस ध्वनि की शक्ति के माध्यम से भगवान की उपस्थिति का उत्सव मनाना होता है। चूँकि इस धुन के स्वर, सर्पिल-से

घुमावदार अन्तरालों में तेज़ी-से ऊपर-नीचे जाते हैं, इसलिए मुझे गतिशीलता की आनन्दमय स्वतन्त्रता का अनुभव होता है और यही भगवान शिव की स्थिति के बारे में मेरी धारणा भी है। मेरे हृदय में जो छवि उभरती है वह है, भगवान शिव नटराज की—नृत्य करते भगवान शिव की, वे जो मन की भ्रान्तियों और जगत के द्वैतभाव का अन्त कर देते हैं।

सिद्धयोग की श्रीगुरु, गुरुमाई चिद्विलासानन्द ने सन् १९८८ की महाशिवरात्रि के अवसर पर 'जय जय शिव शम्भो' के शब्दों व इसकी धुन की रचना की थी। इसके अगले वर्ष नवम्बर माह में गुरुदेव सिद्धपीठ में, सैटिलाइट द्वारा आयोजित पहले शक्तिपात ध्यान-शिविर के दौरान, गुरुमाई जी ने यह नामसंकीर्तन गाया जब उन्होंने विश्वभर के पचपन शहरों में हज़ारों विद्यार्थियों व जिज्ञासुओं को शक्तिपात दीक्षा प्रदान की।

इस संकीर्तन को दरबारी कानडा राग में संगीतबद्ध किया गया है। इस राग को सोलहवीं शताब्दी के संगीतकार, तानसेन जी ने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का हिस्सा बनाया; ऐसा कहा जाता है कि इसकी रचना तानसेन जी ने बादशाह अक़बर के कहने पर की जो चाहते थे कि एक ऐसे राग की रचना हो जिसे रात को गाया जा सके। हिन्दी में दरबारी का अर्थ है 'दरबार से जुड़ा' और इस राग का रस जिन भावों को जगाता है, वे हैं— शौर्य, भव्यता और राजसी वैभव जो कि राजदरबार की ख़ूबियाँ हैं।

नामसंकीर्तन, भगवान के नाम को एक धुन में गाते हुए दोहराना है। सिद्धयोग पथ पर, यह संस्कृत शब्द भगवन्नामसंकीर्तन के अभ्यास और स्वयं उस संकीर्तन, दोनों को दर्शाता है। संगीतबद्ध रूप से भगवान का नाम गाने में असीम शक्ति होती है। अपनी साधना के पच्चीस वर्षों में मेरे लिए नामसंकीर्तन का बहुत महत्त्व रहा है क्योंकि नामसंकीर्तन मुझे हमेशा ही उल्लास से भर देता है। चाहे मैं सिद्धयोग संगीत मण्डली का हिस्सा रहूँ या सत्संग हॉल में बैठकर संकीर्तन को दोहरा रही होती हूँ, संकीर्तन का मेरा अनुभव अलौकिक होता है। नामसंकीर्तन करते हुए, मैं पूरे समय यह कल्पना करती रहती हूँ कि श्वास-प्रश्वास के रूप में नाद, भगवन्नाम का पवित्र नाद मेरे अन्दर आ रहा है और मेरी सत्ता से बाहर प्रवाहित हो रहा है।

नामसंकीर्तन का प्रभाव मेरी सत्ता पर तत्काल ही होता है : जैसे ही मैं नामसंकीर्तन की सुरीली पंक्तियों को सुनती हूँ या उन्हें दोहराती हूँ तो ऐसा महसूस होता है मानो बाकी का सब काम संगीत ही कर देता है। मेरा मन और हृदय बड़ी सहजता से दुःख-दर्द या चिन्ता से भरे विचारों या भावनाओं से मुक्त हो जाते हैं। नामधुन करते-करते मेरी पूरी सत्ता प्रेम में डूब जाती है।

इसलिए आइए, एक साधक के रूप में हम स्वयं को इस नामसंकीर्तन के सिद्धयोग अभ्यास में स्वयं को डूब जाने दें जो कि पुनर्जन्म व पुनर्नवीनीकरण से जुड़ा है। आइए हम भगवान शिव का नाम, 'जय जय शिव शम्भो' गाकर अपने आनन्द व भगवान के प्रति अपनी श्रद्धा-भक्ति को पुनः एक नई ताज़गी व स्फूर्ति से भर दें और अपने अन्दर व सब ओर भगवान के वैभव की, उनकी महिमा की अनुभूति करें!

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।